इकाई – 4 गणनात्मक तुष्टिगुण विश्लेषण
(Cardinal Utility Analysis)
बीएईसी-101 & एमएईसी
(BAEC-101 & MAEC 101)

Presented by
Dr. Shalini Chaudhary
Assistant Professor & Coordinator
Department of Economics
Uttarakhand Open University, Haldwani

गणनात्मक तुष्टिगुण विश्लेषण

- समसीमान्त उपयोगिता विश्लेषण
- उपभोक्ता की संस्थिति तथा मार्शल का समसीमान्त उपयोगिता विश्लेषण
- सिद्धान्त की आलोचनायें
- सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का महत्त्व

उपभोक्ता के व्यवहार का विश्लेषण

किसी वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता ही उपभोक्ता के व्यवहार के विश्लेषण की मूल कड़ी होगी। किसी वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता को व्यक्त करने या मापने को लेकर अर्थशास्त्रियों में मतभेद रहा है। कुछ अर्थशास्त्रियों ने यह माना कि किसी वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता का संख्यात्मक माप या उपयोगिता को 30, 40, 5 आदि रूपों में व्यक्त करना संभव है तो कुछ ने यह माना कि उपयोगिता को संख्या के रूप में नहीं व्यक्त किया जा सकता, उपयोगिता का क्रम वाचक माप ही सम्भव है।

- इन दोनों ही समस्याओं के समाधान के सम्बन्ध में दिये गये सिद्धान्तों को हम दो वर्गों में रख सकते हैं -
- (क)नियोक्लासिकल सीमान्त उपयोगिता दृष्टिकोण या उपयोगिता के संख्यात्मक माप पर आधारित सिद्धांत - मार्शल का सम सीमान्त उपयोगिता दृष्टिकोण।
- (ख)उपयोगिता के क्रम वाचक माप पर आधारित सिद्धांत-
  - हिक्स-एलेन का अनधिमान वक्र (या तटस्थता वक्र) दृष्टिकोण।
  - सेमुएलसन का व्यक्त अधिमान दृष्टिकोण।

समसीमान्त उपयोगिता विश्लेषण

- संख्यात्मक विश्लेषणः मार्शल का यह मत है कि उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक तथ्य होने के बावजूद भी मुद्रा के द्वारा नापी जा सकती है। हम किसी वस्तु के लिए मुद्रा के रूप में मूल्य क्यों देते हैं? क्योंकि उसमें उपयोगिता है। किसी भी वस्तु का मूल्य हम उसकी उपयोगिता से अधिक देने के लिए तैयार नहीं होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी वस्तु की उपयोगिता उस वस्तु के बदले दिये जाने वाले मूल्य के बराबर हुई। मार्शल द्वारा बताई गई उपयोगिता के माप की इस विधि को संख्यात्मक विधि कहते हैं। इस विधि के अनुसार किसी वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता को 10, 15, 50, 65 .... आदि संख्याओं के रूप में व्यक्त किया जा सकता है जैसे रोटी की पहली इकाई से 25, दूसरी से 15, तीसरी से 10 उपयोगिता आदि।

औसत उपयोगिता सीमान्त उपयोगिता तथा कुल उपयोगिता

कलम की इकाइयाँ	उपयोगिता	कुल उपयोगिता	औसत उपयोगिता	सीमान्त उपयोगिता
1	8	8	8	8
2	5	8+5 = 13	6.5	13-8 = 5
3	1	13+1 = 14	4.67	14-13 = 1
4	0	14+0 = 14	3.5	14-14 = 0
5	-1	14-1 =13	2.6	13-14 = -1

रेखाचित्र के माध्यम से विश्लेषण

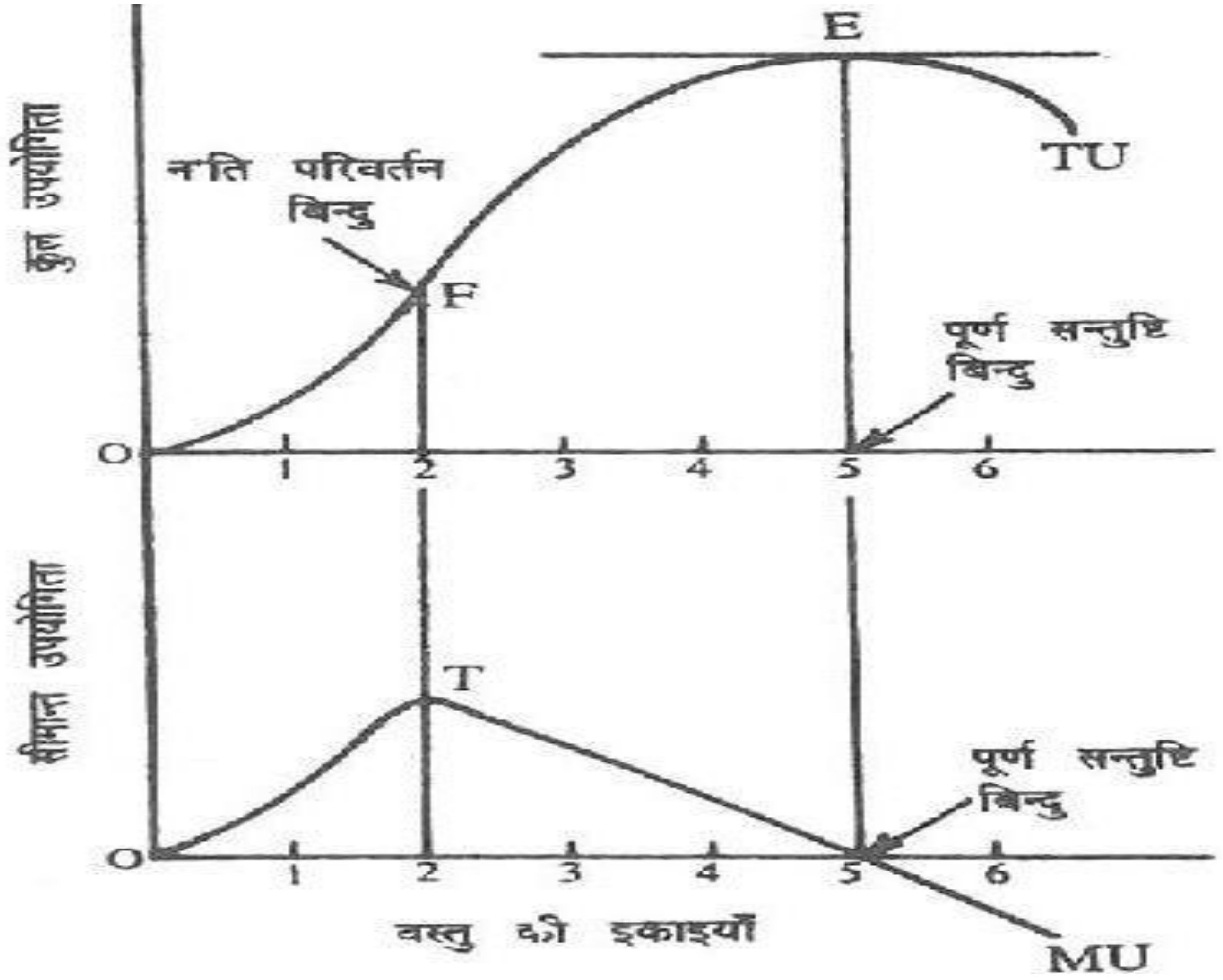

सीमान्त उपयोगिता में घटने की प्रवृत्ति के प्रमुख रूप से निम्नांकित कारण हो सकते हैं

- **मनोवैज्ञानिक आधार**
- **प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ण सन्तुष्टि की सम्भावना**
- **वस्तुओं का परस्पर पूर्ण स्थानापन्न न होना**
- **मान्यतायें-** अर्थशास्त्र के अन्य नियमों की ही भाँति यह नियम भी कुछ मान्यताओं पर आधारित है जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। ये निम्नांकित है -
- उपभोग की क्रिया निरन्तर चलनी चाहिये, ऐसा नहीं है कि फल की एक इकाई प्रातःकाल ली जाये तथा उसकी दूसरी इकाई रात्रि में।
- उपभोग में आने वाली वस्तु की प्रत्येक इकाई गुण, परिमाण, स्वाद, बनावट आदि में समान होनी चाहिए।
- उपभोग की लम्बी अवधि में उपभोग की आय, रुचि, आदत आदि में परिवर्तन नहीं होना चाहिये।
- उपभोग की अवधि में उपभोक्ता की मानसिक स्थिति समान रहनी चाहिये।
- उपभोग की क्रिया की अवधि में वस्तु के मूल्य में परविर्तन नहीं होना चाहिए।
- वस्तु की स्थानापन्न वस्तु का मूल्य भी अपरिवर्तित रहना चाहिए।
- चैपमैन ने यह कहा कि नियम के लागू होने के लिए यह आवश्यक है कि वस्तु की उचित इकाईयों का प्रयोग होना चाहिए।

उपभोक्ता की संस्थिति तथा मार्शल का समसीमान्त उपयोगिता विश्लेषण

जिन पर यह सिद्धान्त आधारित है वे मान्यतायें निम्नवत् हैं -

- विवेक पूर्णताः उपभोक्ता विवेकपूर्ण है।
- सीमित साधन या सीमित मौद्रिक आयः उपभोक्ता के पास साधन सीमित है।
- उपयोगिता का संख्यात्मक मापः मार्शल का समसीमान्त उपयोगिता नियम इस मान्यता पर आधारित है कि प्रत्येक वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता को मापा जा सकता है।
- संख्यात्मक मापा विश्लेषणः विभिन्न इकाइयों से मिलने वाली उपोगिता योगात्मक मानता है अर्थात वस्तु की विभिन्न इकाइयों से मिलने वाली उपोगिता को जोड़ा जा सकता है।
- क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम का क्रियाशीलनः किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयां के उपभोग से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता क्रमशः गिरती हुई होगी।
- मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता के स्थिर रहने की मान्यताः उपभोग के दौरान उपभोक्ता जेसे-जैसे मुद्रा खर्च करता जायेगा उसके पास मुद्रा के स्टॉक में कमी होती जायेगी, फलस्वरूप मुद्रा की उत्तरोत्तर इकाई की सीमान्त उपयोगिता बढ़नी चाहिए पर मार्शल ने यह माना कि मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर रहेगी। कोई भी वस्तु यदि मापक इकाई के रूप में स्वीकार की जाय तो उसके मूल्य में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
- विभिन्न वस्तु समूह से प्राप्त होने वाली उपयोगिता, अलग-अलग वस्तुओं की मात्रा पर निर्भर करेगी। वस्तुओं की जितनी ही अधिक मात्रा उपभोग की जायेगी कुल उपयोगिता उतनी ही अधिक होगी।
- यह दृष्टिकोण आत्मदर्शन पद्धति पर आधारित है।

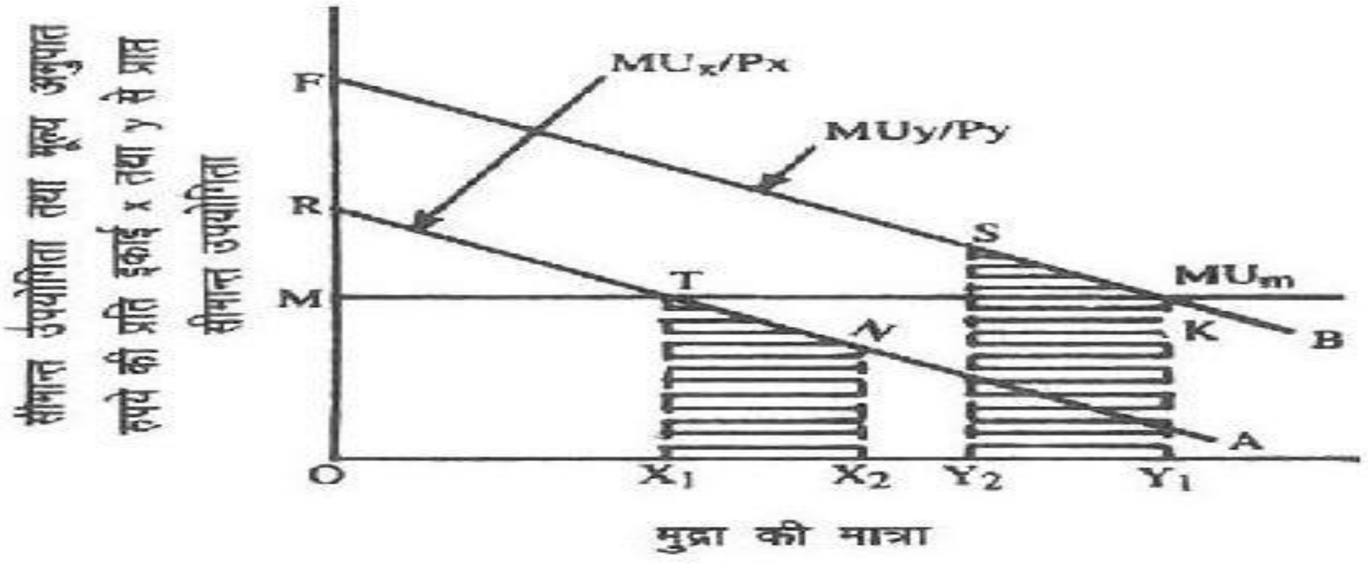

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$$

$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = MUm$ (जो स्थिर है) या $\frac{MU_x}{MU_y} = \frac{P_x}{P_y}$

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = \dots\dots = \frac{MU_n}{P_n} = MU_m$$

सिद्धान्त की आलोचनायें

- उपयोगिता का संख्यातमक माप सम्भव नहीं
- मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता के स्थिर रहने की त्रुटिपूर्ण मान्यता
- उपभोक्ता के विवेकपूर्ण होने की मान्यता
- इकाई-इकाई करके द्रव्यको व्यय करने की त्रुटिपूर्ण मान्यता
- वस्तु की अविभाज्यता
- वस्तुओं के मूल्यों में परिवर्तन
- कुछ वस्तुओं का अधिक टिकाऊ होना
- रीति-रिवाज, फैशन तथा आदत
- कुछ वस्तुओं का न मिलना

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का महत्त्व

- **क.कृषि क्षेत्र में-** किसान अपने विभिन्न खेतों में इस प्रकार के फसल उगाता है जिससे प्रत्येक से मिलने वाला सीमान्त उत्पादन बराबर हो तथा वह विभिन्न उपयोगों में अपना साधन इस प्रकार से लगायेगा कि द्रव्य की अन्तिम इकाई से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता प्रत्येक उपयोग में बराबर हो।
- **ख.मुद्रा तथा वस्तु का वर्तमान तथा भावी प्रयोगः-** इस नियम के आधार पर उपभोक्ता वर्तमान तथा भावी प्रयोग कके बीच अपनी आय अथवा वस्तुओं को इस प्रकार बाँटेगा कि उनसे मिलने वाली वर्तमान की सीमान्त उपयोगिता उनसे मिलने वाली भविष्य की सीमान्त उपयोगिता के बराबर हो जाय।
- **ग.राजस्व के संदर्भ में नियम का प्रयोगः**- राजस्व का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त अधिकम सामाजिक कल्याण का सिद्धान्त भी समसीतान्त उपयोगिता नियम पर आधारित है। कर के सम्बन्ध में नीति निर्धारित करते समय सरकार को कर इस प्रकार लगाना चाहिए जिससे कर से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता उससे होने वाली सीमान्त त्याग के बराबर हो। सार्वजनिक व्यय के सम्बन्ध में भी सरकार अपनी नीति का निर्धारण इस सिद्धान्त के आधार पर कर सकती है।